



बड़ौदा। म्युनिसिपल कमिश्नर मनीश भारद्वाज को रक्षा सूत्र बांधने के बाद ईश्वरीय प्रसाद देते हुए ब्र.कु.राज।



सिकंदराबाद। ब्र.कु.मंजू, ब्र.कु.सोमप्रभा, ब्र.कु.बबन तथा अन्य आध्यात्मिक रैली का स्वागत करते हुए।



कोरबा। शांतिदूत युवा सायकिल यात्रा को सम्बोधित करते हुए विधायक जयसिंह अग्रवाल। मंचासीन हैं ब्र.कु.रुकमणि, ब्र.कु.भगवान तथा अन्य।

आपकी खुशी आपके पास



क्या आप अशांत हैं, क्या आप अवसाद के दौर से गुजर रहे हैं, क्या आपके मिजाज को क्रोध ने वश कर लिया है, क्या आप तनाव से ग्रस्त हैं। क्या आपने कभी सोचा है मन की शांति के लिए रिमोट कंट्रोल आपके पास है। देखिए नॉन स्टॉप, बिना किसी विज्ञापन के, आध्यात्मिकता के गुह्य रहस्यों को स्पष्ट करता हुआ 'पीस ऑफ माइंड चैनल, आपके शहर में उपलब्ध है। Enquiry Mob. 18602331035, 83020222022, channel-697

सूचना- ओमशान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने वाले भाइयों की आवश्यकता है। ईमेल, वेबसाइट तथा साफ्टवेयर की जानकारी रखने वाले भाई की भी आवश्यकता है। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें -

E-mail-
mediabkm@gmail.com,
Mob.-8107119445



प्रश्न- मेरा मन पढ़ाई में नहीं लगता। मैं गन्दी फिल्में देखता हूँ और फिल्म देखते-देखते मेरा किसी से प्यार हो गया है। मेरी एकाग्रता पूरी तरह से नष्ट हो गई है। पढ़ने बैठता हूँ तो वही मुझे बार-बार याद आती है। मैं बहुत होशियार रहा हूँ पर अब पूरी तरह से डिस्टर्ब हो गया हूँ, मैं इस माया से छूटना चाहता हूँ।

उत्तर- विद्यार्थी काल मनुष्य का स्वर्ण काल है। इसी काल में विद्यार्थी अपने भविष्य का निर्माण करता है अथवा यों कहें कि वो अपने भाग्य का निर्माण करता है परन्तु यदि वह मार्ग से भटक जाए तो उसे जीवन भर पछताना पड़ता है। आजकल चारों ओर का वातावरण विषय-वासनाओं से भरपूर है। इंटरनेट, फेसबुक व टी.वी. ने अनेकों की बुद्धि को विकृत कर दिया है। कलयुग का अन्त है तो ये सब कुछ तो होना ही है परन्तु अंधकार में आत्म ज्योति जगाये रखना-ये हमारा ही कर्तव्य है। बन्धु, आप दुर्गति के मार्ग पर कदम रख चुके हो। नेट पर गन्दी फिल्में देखना माना स्वयं को माया के नेट में फंसाना। छोटी आयु में ही किसी के प्यार में फंसने से बुद्धि दूषित हो ही जाती है। इसलिए पहली बात है- मन में दृढ़ संकल्प करो कि मुझे इस माया से बचना है व पूरा ध्यान पढ़ाई में देना है। इस दैहिक प्यार में धोखा है। जिसका आज आपसे प्यार है, उसका कल किसी और से प्यार हो जाएगा। आप नेट पर गन्दी साइट पर जाना छोड़ दो तथा उस लड़की को आत्मा देखो और बार-बार याद करो कि मैं तो पवित्र आत्मा हूँ। इससे आपकी बुद्धि शुद्ध होती जाएगी और एकाग्रता बढ़ेगी। मन में चिन्तन करो तो आप मुक्त हो जाएंगे।

प्रश्न- मैं एक गृहिणी हूँ, मेरा जीवन अब समस्याओं से घिर गया है। मेरी बच्ची मेरी बात ज़रा भी नहीं सुनती। पति दुकान छोड़कर घर में बैठ गए हैं और शराब पीने लगे हैं। मेरा मन परेशान रहता है, मैं क्या करूँ?

उत्तर- शराब पीना तो आज सामान्य होता जा रहा है। लोग सोचते हैं कि नींद नहीं आ रही तो शराब पी लें। परन्तु शराब तो कर रही है जीवन को खराब। शराबियों को ज्ञात रहे कि जल्दी ही वे मौत का शिकार हो जाएंगे। उनकी किडनी व लीवर फेल हो जाएंगे। आपका चिन्तित होना तो स्वभाविक है। पति दुर्गति के

मार्ग पर है, लड़की आज्ञाकारी नहीं है, वह भी आपके लिए परेशानी का कारण है। याद रखें कि जितनी आपकी स्थिति अच्छी होगी ये परिस्थितियाँ बदल जाएंगी। आपके ऊपर जो ये विघ्न आया है, इसके निवारण हेतु आप इक्कीस दिन की विघ्न-विनाशक भट्टी करें।

अमृतवेले योग करने के अतिरिक्त कोई भी एक घंटा आप पावरफुल योग करें। योग से पूर्व दो स्वमान सात बार याद करें। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व विघ्न-विनाशक हूँ। इक्कीस दिन में ही आपके परिवार पर छाये ये काले बादल बिखर जाएंगे। अपनी लड़की को आत्मिक दृष्टि से देखें। उसे प्रेम व शुभ-भावनाओं के वायब्रेशन्स दें, नफरत के नहीं। यदि आप स्वमान में ज्यादा रहेंगी तो आपके बोल में प्रभाव आ जाएगा तथा आपके पति और लड़की आपकी बातों का सम्मान करेंगे।

प्रश्न- हम इस संसार में बहुत दुखी हो गए हैं। सभी लोग हमें तंग करते हैं हम तो मुक्ति चाहते हैं। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हमें मोक्ष मिल जाए और हम इस गन्दी दुनिया में आये ही नहीं?

उत्तर- आपकी मुक्ति की इच्छा दुखों के कारण है। आपको इच्छा रखनी चाहिए दुखों से मुक्त होने की। ऐसा हो सकता है कि आप इस दुखी दुनिया में आये ही नहीं परन्तु यदि दुनिया सम्पूर्ण सुखों की हो, तब तो आप इसमें अवश्य आना चाहेंगे। मुक्ति का मार्ग है-राजयोग।

यदि कोई मनुष्य दुखी है तो उसका जिम्मेवार वह स्वयं है। आप चेक कर लें कि किस विकार ने आपको दुखी किया है। आप कहते हैं कि लोग हमें बहुत तंग करते हैं। परन्तु कोई किसी को तंग नहीं करता बल्कि मनुष्य का स्वभाव ही उसे तंग करता है। जो लोग आपको तंग कर रहे हैं, अवश्य ही पूर्व जन्मों में आपने भी उन्हें तंग किया होगा। यहाँ कुछ भी बिना कारण नहीं हो रहा है परन्तु यदि आप संकल्प कर लें कि मुझे तंग होना ही नहीं है तो कोई कुछ भी नहीं कर सकेगा।



मौन में ... -पेज 2 का शेष

पर विचार किया तो इस प्रकार लगा : चुप रहने का सबसे पहला गुण है कि अनावश्यक संघर्ष घटता है, आप सुन कर कुछ भी प्रतिक्रिया नहीं करते इसलिए अंदर और बाहर संघर्षों की उथल-पुथल से बच जाते हैं।

2. चुप रहने का दूसरा महत्वपूर्ण गुण है कम समय में आवेश घट जाता है। मारामारी तक का विचार यदि आ गया है तो भी थोड़ा समय बीतते ही हंसने जैसी सिद्धि प्राप्त हो जाती है। गुरजी एफ.को उनके दादा ने एक सूत्र दिया कि "बेटा! जीवन में सुखी होना है तो किसी भी घटना की प्रतिक्रिया 24 घण्टे से पहले नहीं करना" कोई आपको गाली देकर जाए आपके विरोध में कुछ बोल के जाए, 24 घण्टे बीतने के बाद ही उसको जवाब देना। और गुरजी एफ.ने लिखा है कि 24 घण्टे के बाद कोई भी प्रतिक्रिया करने की इच्छा ही नहीं होती। उल्टा ही हंसी आती है कि जिस व्यक्ति के शब्द सुनकर उसकी हत्या करने की इच्छा हो गई थी, 24 घण्टे के बाद उस व्यक्ति से माफी मांगने की इच्छा होती है क्योंकि हम उस व्यक्ति के मन में क्रोध उत्पन्न करने के निमित्त बने!

3. चुप रहने से तीसरा फायदा इस बात का होता है

तुरंत प्रतिक्रिया न करना और चुप रहना उसके बीच में जो समय मिलता है उसमें सत्य को खोज सकते हैं। क्या मालूम कि मुझे जो कहा गया वो सत्य भी हो सकता है और असत्य भी हो सकता है और अगर सत्य है तो समझदारी के साथ स्वीकार कर कहने वाले का आभार मानना चाहिए और यदि असत्य है तो उसमें दुःखी होने की जरूरत ही क्या है?

4. चुप रहने का चौथा गुण है कि अपने अंदर शक्ति का संचय होता है, मुख से निकलता हरेक शब्द हमारी शक्ति को बाहर निकालता रहता है इसलिए दिन भर में बेटुकि बातों के दरमियान हम अपनी शक्ति को बाहर निकालते ही रहते हैं और शान्त रहने से ऐसा दुर्व्यय रुकता है और स्वयं में नई शक्तियों का अनुभव होता है।

5. अपने संयम और सहिष्णुता के गुण में विकास होता है। हम कोई खिलौना बन के नहीं रहते। कोई चाबी लगाता है और हम चलने लग पड़ते हैं उसी प्रकार कोई कुछ बोले और हम दुःखी हो जाएं, अपनी चाबी दूसरे के हाथ में सौंप दें। इसलिए यदि शांत रहते हैं तो अपने ऊपर स्वामित्व भाव का भी विकास होता है।

6. छठवाँ गुण है कि वाणी विलास रुकता है, हम इतने शब्द इसलिए ही बोलते हैं कि बोलने से

आप स्वयं को हल्का करें। व्यर्थ सोच-सोच कर ही मनुष्य दुखी होता है थोड़ा सभी को शुभ-भावनाओं का दान दें। दूसरों को सुखी देखकर व दूसरों को आगे बढ़ते हुए देखकर आप प्रसन्न हो जाएं।

प्रतिदिन सवेरे अच्छा योग करें, महावाक्य सुनें व अपने मन को शान्त व शुद्ध करें। यह आपके अपने हाथ में है। आपको तो सबके दुख दूर करने हैं आप स्वयं दुखी कैसे हो सकती हैं। रही बात सदा मुक्ति में जाने की तो आपको तो हीरो एक्टर बनना है, निष्क्रिय होकर घर में नहीं बैठ जाना है।

प्रश्न- जब मैं दीन-दुखियों को देखती हूँ तो बड़ा ही रहम आता है। मन करता है कि इनकी खूब मदद करूँ। कोई भी गरीब या भूखाना न रहे परन्तु मेरे पास धन नहीं है, तो मैं मन मारकर ही रह जाती हूँ, मैं क्या करूँ?

उत्तर- आपके मन का दयाभाव आपकी महानता को दर्शाता है। शिवबाबा भी हमें कहते हैं रहम दिल बनो। परन्तु धन से आज किसी को सुखी नहीं किया जा सकता है। एक राज्य में सरकार ने आदिवासियों को बहुत चावल देना शुरू कर दिया है। अब वे लोग न तो काम करते और जो थोड़ा-बहुत कमाते हैं, उसकी शराब पीते हैं।

सच्चा रहम है मनुष्य को सन्मार्ग दिखाना, उन्हें सत्य ज्ञान देना, उन्हें कर्मठ बनाना व पुण्य कर्म करने सिखाना। क्योंकि जो भी दुर्गति आज हम मनुष्य की देख रहे हैं, उसका कारण उसके पाप व मनोविकार ही हैं इसलिए यदि आप रहम दिल हैं तो उन्हें सत्य मार्ग दिखाओ।

संसार में दीनता, गरीबी, रोग व दुख बढ़ते ही जा रहे हैं। सरकारें या अन्य कोई भी साधन इन्हें बढ़ने से रोक नहीं पा रहा है आप इसमें मदद कर सकती हैं।

इसके लिए स्वयं को महान योगी बनाओ। योग का चार्ट प्रतिदिन आठ घण्टे होना चाहिए। प्रतिदिन तीन बार सारे संसार को श्रेष्ठ वायब्रेशन दो ताकि मनुष्य में जागृति आये और वह अपनी गरीबी से खुद मुक्त हो सके।

अब भगवान ऐसा विश्व रच रहे हैं जो धरा पर चार हजार वर्ष तक न भूख रहेगी, न गरीबी, न दुख रहेंगे न रोग। आपका सच्चा रहम यही होगा कि सबको भगवान से मिलाओ। ताकि वे आत्माएं भी अपने परमपिता से सुख की दुनिया में चलने का वर्सा ले सकें।

दूसरों के ऊपर प्रभाव डाल सकें। अपने आप को दूसरे से ज्यादा अच्छा और ऊँचा सिद्ध करने की क्या जरूरत है?

7. यदि चुप रहने की कला में हम निपुण हो जाते हैं और चुप रहना आ जाता है तो हमारे जीवन में सुख और शान्ति की वृद्धि होती है, केवल अपने में ही नहीं बल्कि अपने परिवार में भी राहत और शांति का प्रसार होता है। ज्यादा बोलने से दूसरों को दुख होता है और हमारी कटु प्रतिक्रिया दूसरों को जख्म देती है, शांत रहने से ये हिंसा रुकती है।

8. आठवाँ लाभ या गुण कहें वाणी का दुर्व्यय रुकने से अपने जीवन में मौन का उदय होता है और जो जानते हैं वो कायम रहते भी हैं और शब्दों के माध्यम से कुछ भी अभिव्यक्त नहीं करते। असत्य की अभिव्यक्ति के लिए भले ही शब्दों का उपयोग होता हो लेकिन सत्य के लिए शब्द निरर्थक है। यहाँ तो मौन के सिवाय कुछ भी काम नहीं आता है क्योंकि मौन ही सत्य की अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ माध्यम है।

9. चुप रहने का नौवा गुण है साक्षी भाव की साधना। चुप रहने से और प्रतिक्रिया न करने से पसंदगी रहित जागरूकता, 'च्चाइस लेस अवेयरनेस' अर्थात् साक्षी भाव का उदय होता है और अंततः उसमें से एक अतुलनीय अंतर्दशा का उद्भव एवं निर्माण होता है।